प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा. गीता वासुदेव जोशी ने मेरे निर्देशन में " रामधारीसिंह दिनकर लिखित कुरुक्षेत्र के भीष्म " यह लघु-शोध प्रबंध एम्. फिल. उपाधि के लिए लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। यह लघु शोध प्रबंध पूर्व योजना नुसार लिखा गया है। इसमें जो तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं संपूर्ण शोध-प्रबंध को अद्योपान्त पढकर ही यह प्रमाण पत्र दे रहा हूँ। मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि, यह लघु शोध प्रबंध किसी भी विद्यापीठ में किसी भी उपाधि के हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

निर्देशक

प्राचार्य डॉ. बी. बी. पाटील,

एम्. ए. पी-एच. डी.,

महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर.

कोल्हापुर.

दि. ३०-५-१९९२.

भूमिका

विवाहपूर्व मैं संयुक्त परिवार की लडकी रही हूँ। मेरे परिवारमें बीस-पच्चीस लोग रहते थे। घर धार्मिक संस्कारों से परिपूर्ण था। किंतु छोटी-मोटी बातों पर हमेशा वाद विवाद हुआ करते थे। विवादों का स्वरूप जब गंभीर हो जाता तब दादीमाँ इन समस्याओं का समाधान करती।दादी माँ का व्यवहार परिवार के सभी लोगों के साथ स्नेह भरा और निस्वार्थ रूप से हुआ करता था। इसी वातावरणमें मैंने कॉलेज जीवन में प्रवेश किया।

लिंगराज कॉलिज, बेलगाम में बी. ए. भाग २ में पढते समय संयोगवश पाठयक्रममें दिनकर लिखित "कुरुक्षेत्र" लगाया गया था। मेरे अध्यापक यह काव्यसंग्रह पढाते समय भीष्म का वर्णन करते तो मैं उत्तेजित हो जाती शायद उनके अध्यापन के प्रभाव के कारण मेरा मन "भीष्म" में अटक जाता था। यह काव्य पढते समय मेरे सामने मेरी दादी माँ "भीष्म" रूपमें खडी हो जाती थी। दो तीन साल ऐसे ही गुजर गए। टेलिव्हिजन पर बी. आर. चोप्रा द्वारा निर्देशित महाभारत धारावाहिक प्रसारित किया गया। इस धारावाहिकमें "भीष्म" पात्र आधोपांत देखने मिला। यहाँ मेरे सामने"दादी माँ" और "कुरुक्षेत्र के भीष्म" फिर से खडे हो गए। भीष्म के बारेमें कुछ लिखने की बात मनमें आयी। किंतु कुछ कारणवश मनकी बात मनमें ही रह गयी। जब एम्. फिल. उपाधि हेतु लघु-शोध प्रबंध के लिए विषय चुनने की बात आयी तो मेरे मनमें फिरसे "भीष्म" खडे हो गए। अत: मैंने विचार किया कि "भीष्म" के बारेमें ही कुछ लिखूँ। यह विचार आते ही मैंने अपने निर्देशक प्राचार्य डॉ. बी. बी. पाटील जी के साथ चर्चा की तब वे भी राजी हो गए।

मेरे खुशी का ठिकाना न रहा। अत: मैंने महाभारत को पूरा पढ लिया। क्योंकि "कुरुक्षेत्र" के भीष्म पर शोध प्रबंध लिखना है, तो महाभारत का "भीष्म" पढना आवश्यक था। और मैंने कार्य प्रारंभ किया।

" रामधारीसिंह दिनकर लिखित 'कुरुक्षेत्र के भीष्म" इस लघुशोध प्रबंध को मैंने पाँच अध्यायोंमें विभक्त किया है, जो निम्नलिखित है -

अध्याय पहला - दिनकर का साहित्य।
अध्याय दूसरा - कुरुक्षेत्र का संक्षिप्त कथानक।
अध्याय तीसरा- महाभारत के भीष्म।
अध्याय चौथा - कुरुक्षेत्र के भीष्म।
अध्याय पाँचवा- उपसंहार।

प्रथम अध्यायमें दिनकर के जीवन वृत्तांत पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए उनकी प्रामाणिक जीवनी, उनके माता-पिता उनकी शिक्षा-दीक्षा, उनके साहित्य की समग्र सूची दी गई है। इसके अतिरिक्त उनके साहित्य को प्रेरणा कब और कहाँ से मिली, उनकी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या थी आदिका विश्लेषण किया गया है। अंतमें उन्हें साहित्य रचना के कारण पद्मभूषण, डि. लिट. आदि उपाधियाँ किस तरह प्राप्त हुई इसका जिक्र करते हुए उनके साहित्य का किन किन भाषाओंमें अनुवाद हो रहा है इसका उल्लेख किया गया है।

दूसरे अध्यायमें प्रत्येक सर्ग का संक्षिप्त कथानक प्रस्तुत किया है।

तीसरे अध्यायमें महर्षि वसिष्ठ से शापित द्यु नामक आठवे-वसू

का गंगा शांतनू की कोख से भीष्म का जन्मवृत्तांत बताते हुए उन्हें अनेक नामों से किस तरह और क्यों विभूषित किया गया है इसका वर्णन करते हुए "भीष्म" प्रतिज्ञा का वृत्तांत भी दिया है। आगे विचित्रवीर्य को विवाहमें अंबा कांड का उद्भव तथा गुरु के साथ युध्द करते समय गुरुको ही धर्माधर्म की बातों का परिचय क्यों देना पडा इसका विश्लेषण किया है। इसके बाद युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञमें किस धर्म का पालन किया इसका जिक्र करते हुए द्यूतक्रीडा और द्रौपदी वस्त्रहरणमें उन्होंने कौनसी भूमिका निभायी, इसका वर्णन किया गया है। बादमें पांडवों के अज्ञातवास की अवधि पूर्ण होने के बारेमें उन्होंने जो निर्णय दिया उसका जिक्र करते हुए महाभारत के युध्दमें उनकी भूमिका को स्पष्ट किया है। अंतमें शरपंजरी भीष्म का शांतिपर्वमें राजधर्म, मोक्षधर्म, आपध्दर्म आदि संबंधी किया हुआ संक्षिप्त विवेचन दिया गया है।

चौथे अध्यायमें कवि दिनकर ने भीष्म का युगानुकूल रूप किस तरह प्रस्तुत किया है यह दिखाने का प्रयास किया गया है। युध्द का कारण क्या है ? वास्तविक शांति तथा कृत्रिम शांति किस तरह निर्माण होती है, इसका विश्लेषण करते हुए भीष्म के मतसे युध्द अनिवार्य क्यों होता है ? इसका विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्यायमें व्यष्टि-समष्टि का समन्वय प्रस्तुत करते हुए भाग्यवाद का खंडन और कर्मवाद की स्थापना की गई है। राजतंत्र की निंदा करके व्यक्तिस्वातंत्र्य को महत्व देकर नवीन समाज रचना की कल्पना बतायी गई है। निवृतिपर - प्रवृत्ति की विजय दिखाकर समन्वयवादी भूमिका को स्पष्ट करके स्नेह और बलिदान से आशा का प्रदीप जलाने का संदेश बताया गया है।

इस लघुशोध प्रबंध के पाँचवे अध्यायमें पहले चार अध्यायोंमें जो

बातें निष्कर्ष रूपमें सामने आई उनको प्रामाणिक रूपसे प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

यह लघु शोध प्रबंध मेरे गुरुवर्य श्रध्देय प्राचार्य डॉ. बी. बी. पाटील जी के आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफलन है। उनका प्राप्त स्नेह और मार्गदर्शन समय समय पर न मिलता तो मेरे लिए यह कार्य संभव नहीं था। अत: मैं उनकी ऋणी हूँ, लेकिन उनके ऋण से उऋण नहीं होना चाहती। केवल उनके प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ।

इस लघु शोध प्रबंध के लिए मेरे माता-पिता, सास-ससुर और मेरे पति श्री. प्रसन्न कुलकर्णी इनसे समय समय पर प्रेरणा और सहयोग मिलता रहा। अत: मैं उनके प्रति हृदय से प्रेम व्यक्त करती हूँ।

इस लेखन कार्य के लिए मेरे देवरजी ग्रंथों की उपलब्धि करा देने में सहायक रहे। महाराष्ट्र ग्रंथ भांडार के प्रमुख श्री. एस्. जी. कुलकर्णी, हिंदी प्रचार सभा के प्रमुख, तथा सौ. एल्. जे. भद्रे [ग्रंथपाल, महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर] आदि मुझे समय समय पर ग्रंथों की सहायता करते रहे। जिसके कारण मैं यह काम कर सकी। अत: उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

यह लघु शोध प्रबंध अत्यंत अल्प समयमें शीघ्रता से टंकलिखित करने का कार्य महालक्ष्मी टायपिंग, कोल्हापुर ने किया है। इसलिए इस संस्था की टायपिस्ट सौ. रागिणी राजाराम कुलकर्णी, औरवाडकर की भी मैं आभारी हूँ।

अंतमें उन सभी ग्रंथलेखकों एवं स्नेही मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ कि, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपसे सहयोग देकर इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करनेमें सहायता दी है। अत: मैं इस कृतिमें होनेवाले त्रुटियों को स्वीकार करते हुए यह लघु शोध प्रबंध आपके सामने प्रस्तुत करती हूँ।

कोल्हापुर.
30.5.1992.

प्रा. जी. व्ही. जोशी.